

मृत्यू और पुनर्जन्म के बीचमें कितना गैप है?

गीता में कहा गया है कि, 'वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृहयति नरोऽपराणि तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयति नवानि देही।' अर्थात् जिस प्रकार मनुष्य अपने पुराने कपड़ों को त्याग कर नये पहन लेता है, उसी तरह आत्मा पुराने शरीर को त्यागकर नया शरीर धारण कर लेती है।

अब हम कपड़ों के बदलने के बारे में सोचेंगे। कपड़े बदलने का अनुभव हरेक को हर रोज होता है। यदि लोगों के सामने हमें कपड़े बदलने पड़ें तो हम पहले निचे के आधे वस्त्र निकालकर पहन लेते हैं फिर ऊपर के आधे कपड़े निकालकर पहनते हैं। और यदि कमरे में कोई नहीं है तो झटके में, एक ही पल में पूरे वस्त्र निकाले और पहन जाते हैं। इस बीच एक क्षण के लिए ही क्यों न हो, व्यक्ति नंगा हो जाता है। कमरे में कोई नहीं है फिर भी वह ज्यादा देर तक नंगा नहीं रहता, तुरन्त कपड़े बदलता है। यही एक पल होता है जो रहस्यमय होता है। और यही एक पल होता है जो जन्म और मृत्यू के रहस्य खोलता है। पूर्वजन्म और पुनर्जन्म का रहस्य भी इसी एक पल में छुपा है। अब सवाल यह भी पैदा होता है कि मृत्यू के बाद नया जन्म लेने में कितना समय लगता है?

हिन्दु धर्म - ग्रंथों में जन्म और मृत्यू के बीच के इस गैप को लेकर अलग - अलग मत हैं। इसके अनुसार एक क्षण से लेकर वर्षों बाद भी पुनर्जन्म हो सकता है। किंतु महावीर के जीवन - दर्शन के अनुसार आत्मा के एक शरीर से दूसरे शरीर में प्रवेश करने की घटना एक साथ पलभर में होती है। ठीक ऐसे ही जैसे कपड़े बदलने की प्रक्रिया होती है। एक तरफ आत्मा देह त्याग कर रही होती है और दूसरी तरफ नया शरीर धारण कर रही होती है। अर्थात् मृत्यू के समय दोनों किनारे टच करने के बाद ही आत्मा अपना पुराना शरीर छोड़ देती है। मृत्यू और पुनर्जन्म की यह घटना एक साथ होती है। जिसे गीता के इस श्लोक में कृष्ण ने भी बताया है